

इ. वि. का. राजवाडे संग्रोधन मंडळ घुळें.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह:—

ग्रंथ क्रमांक



५२८ (१५८)

ग्रंथ नाम

वि. प्रकरणे.

विषय

मराठी काव्य.

01) 2९/३

श्रीरामजन्मप्रारंभ... यिआठउनिप...  
 ग्वारसागवदतरेखनतारकथारसा...  
 रसजोमुनिवाल्मिकिगातसे॥सक...  
 कथातुहिगातसे॥॥प्रकटनामच...  
 ॥चिलौकराजि... कितयाअ...  
 ॥शयनिग... करमहा...  
 ॥वित... ॥या...  
 ॥मालसंति... नमन...  
 ॥वर्षि... अशिलोकीं॥य...  
 ॥नियुणतोअवलोकीं॥आयोगी...  
 ॥यजन्मनराधवा... तोयोग...  
 ॥अशीगोहिनाया... काळातलेउ...  
 ॥डा.नकाड... श्रीरामजन्मोंकरि...  
 ॥व... ॥४॥ जंनीमनीभक्ति...



Project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.



कल्याण जश्या चंद्रकलासंबुद्धि  
 वाटसुरेवं चंद्रमनेभिमानि ॥ तौ शुक्ल  
 पक्षिजन जन्ममानी ॥ ५ ॥ गेडरामरस  
 केवळसेती ॥ सेविला प्रथमसासव  
 संति ॥ यारसेमधुसोमधुजाला ॥  
 जयातय ॥ तयजाला ॥ ६ ॥  
 मय्यन ॥ ठाभिमानि ॥ व  
 जोउत ॥ यमानी ॥ वडील  
 वंशी प्रस ॥ ७ ॥ तयादाख  
 वी उद्धाच्या सुकोळी ॥ ८ ॥ रामाव  
 तारार्थ जगीभुकेल्या ॥ भक्तीजनीया  
 श्रवणादिकेल्या ॥ नवप्रकारेभुजनी  
 अजाला ॥ ९ ॥ जन्मप्रभूचानवमीसजा  
 ॥ १० ॥ ११ ॥ नवदिननवरात्रीभक्तिलोकी



Project of the Rajawade Sansodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Nashik. "Iqbal"



॥ करा हो ॥ नव विध निज जती सूचवी  
 ॥ कीं करा हो ॥ नवरसनवमीस स्वामी  
 ॥ चा जन्मजात ॥ नवनवरसअपशिरी  
 ॥ तिनेया अजात ॥ ११ ॥ नवविधानवरीं  
 ॥ श्रीमहाधने ॥ गुणकथाश्रवणादिकसा  
 ॥ धने ॥ करुनिसे पाहिल निवेदना ॥  
 ॥ प्रजनिसेत ॥ नंदना ॥ १० ॥ चित  
 ॥ जो उपसमीप ॥ राघवी करील  
 ॥ तो उपवासी ॥ तंजुनि दुज्या विष  
 ॥ याते ॥ सेवितं सुरवगमे विषयाते ॥ ११ ॥  
 ॥ अयो ध्ये मध्ये लोके सेचिसारे ॥ वि  
 ॥ नारामजेने गती हे पसरि ॥ तयाचेच  
 ॥ गाती असे गीत नाना ॥ नज्या कीर्तनी  
 ॥ अन्यवातति नाना ॥ १२ ॥ टळटळित



Joint project of the  
 Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.



(५)

॥ दुपां राजन्मलारामराणा ॥ ह्ययुनिसक  
॥ वगाती ठाउके हेपुराणा ॥ देशरथगृहमा  
॥ थासूर्य आला अहोते ॥ कुकटिलकपहा  
॥ यानो चीमा ध्यानहेतो ॥ १३ ॥ सासुस्वारवि  
॥ अखंड सुपारा ॥ वादते स्मरतसे लदुपारा ॥  
॥ स्तब्धयास्तव अने विचि ई ली ॥ कीं स्मरोनी  
॥ सुखते उ पडी ॥ यं कृतरीक्षी हुनी  
॥ त्वे कुराते ॥ अहं रंला मियेले कराते ॥  
॥ झणी उष्णला ॥ गद्यवाते ॥ दुसूनी  
॥ चदावी अश्याला धिवाते ॥ १४ ॥ सूर्ययास्त  
॥ वअसे गगनीच ॥ हे विचास्त निनये मगनी  
॥ च ॥ साउ ली कस्तुनि आड ची पाहे ॥ उष्णशं  
॥ कित करी स्वक्रु पाहे ॥ १५ ॥ छाया ह्यणे वा  
॥ यिल हे मलाजे ॥ घेउ नियं हे कर हे मलाजे ॥



Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.



॥ ज्ञाताचिमी अव्यवधानमाते ॥ देसू नि  
 ॥ सो डीलर द्युतमाते ॥ १७ ॥ आणिरवी प्रक  
 ॥ कटको तुकरीती ॥ वाल्मिक प्रभतिये थक  
 ॥ रीती ॥ मेघराशि पदवी बरवी हो ॥ घेत इ  
 ॥ तद विलंब रवी हो ॥ १८ ॥ युत्र उत्पह जया  
 ॥ शिविराजे उत्पह सविचबेस विराजे ॥  
 ॥ सूर्य ये परम ॥ १९ ॥ से विती ग्रह स  
 ॥ मस्तपदाति ॥ २० ॥ ला विमुच्या विम  
 ॥ लक्षणी ॥ २१ ॥ व दे सु म लक्षणी ॥  
 ॥ ह्यणि मारु निय यु रू वादाहा ॥ करि  
 ॥ लशु म्र यशें स्वदिशा दाहा ॥ २२ ॥ दश रथ  
 ॥ स्वसुता ननया हातो ॥ निज सु रवे सु नि  
 ॥ होउ निराह तो ॥ जगय टीं सु स्वतं तु नि  
 ॥ राजतो ॥ प्रकट लनय नीं रघु राजतो ॥ २३ ॥  
 ॥ रवी च्या करें शाम राय घनाशी ॥ तथा च



॥ च संतापतो मेघनाशी ॥ तथा सूर्यवं  
 ॥ शीं घनशामरामा ॥ करीकाळे वैवस्वता  
 ॥ चा विरामा ॥ २२ ॥ जसेचातकाला घनचे  
 ॥ चघाणी ॥ स्वभक्तान्तस रामको दड्या  
 ॥ णी ॥ ह्येगानी घनश्यामहारामजाला ॥  
 ॥ जयाकारे फेजेन के गे उजाला ॥ २३ ॥  
 ॥ बुंग बुंग खेतं ॥ ॥ सगासंगनट  
 ॥ तिस्वक्रुदगि ॥ ॥ बहुदावितरंगि ॥  
 ॥ रामरंग सुरव ॥ ॥ रंगी ॥ २४ ॥ दुमबु  
 ॥ मध्वनिवजतिंदु ॥ ॥ सहितराक्षस  
 ॥ रावणवृंदभी ॥ सुस्वनरासकळा अम  
 ॥ रामहा ॥ प्रकटतां चिरघूतमरामहा ॥  
 ॥ २५ ॥ रविकुळेतरघूतमरामहा ॥ उष  
 ॥ जतासुरवदेअमरामहा ॥ सकळपूर्ण  
 ॥ मनोरथमेदिनिं ॥ करितयांतअहोप्र



Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the  
 Chavari Prasthapan  
 www.rajawade.org



॥ थमेदिनि ॥ २४ ॥ ब्रह्मपूणगुणवैभवला  
 ॥ की ॥ जन्मतांमगधराश्रवलोकी ॥ योग्य  
 ॥ त्तें किसगमेनवराहो ॥ जोमनीं ह्यणवि  
 ॥ मानवराहो ॥ २७ ॥ तो न्हाणितं राघवदा  
 ॥ नवारी ॥ करांत कन्यार्पणदानवारी ॥ श्री  
 ॥ भूमिसंकल्पकस विद्याली ॥ विवाहत  
 ॥ ल्काळकानि ॥ २८ ॥ आणीक आ  
 ॥ नंद अपारज ॥ लाधले पायिचि  
 ॥ यारजाल ॥ ऐ ॥ खेराधव जन्मका  
 ॥ वीं ॥ जनाशिया ॥ धरणी सुकाळी ॥  
 ॥ २५ ॥ असें सर्व लोकां सदीवे गळाले ॥ दि  
 ॥ ल्हे सो हळे दोषयंचि गळाले ॥ जळे  
 ॥ न्हाणितं रामकोद ड्याणी ॥ महादा  
 ॥ घे गले ह्ये आ जियाणी ॥ ३० ॥ तारी  
 ॥ लयाघाण असे जळाले ॥ कळे ह्ये दो



॥ष जळो जळाला ॥ तिह्यांतरी तारक ३॥  
 ॥ किराम ॥ देसी ल अहो सीमना भीराम  
 ॥ ३१ ॥ हेखू निया जन्म असा अजाला ॥ आ  
 ॥ नंद मोटा उदका शिजाला ॥ ऐसाच आ  
 ॥ नंद समस्त भूती ॥ श्री राघव वाची करि  
 ॥ हो विभूती ॥ ३२ ॥ भोवा श्यांच्या सदांजि  
 ॥ विज्ञाला ॥ स्वरे दी लकुंडांत जा  
 ॥ ला ॥ ह्येणे अ मला पाळणार ॥  
 ॥ यया उपरि यद्द लणार ॥ ३३ ॥ स्वसु  
 ॥ तरा घवदास्य सुवेकरो ॥ विभव हे अवलोकि  
 ॥ न लौकरी ॥ यवनघे अ शिराम सुरवे घनी ॥  
 ॥ प्रकटतां कपिमास्ततिचा घनी ॥ ३४ ॥ पुत्रा  
 ॥ मपरमानवसांचा ॥ व्यर्थ अंन्यपरमानव  
 ॥ साचा ॥ पुत्रवा सचुकरी नरकाचा ॥ दु  
 ॥ र्मती अचुकरी नरकाचा ॥ ३५ ॥ रामभक्त



Project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.



॥ सुतमानवलोकीं ॥ तत्पिताननरकावलो  
 ॥ की ॥ गोरहि हे अलिकडे चवदावी ॥ साशितो  
 ॥ स्वपदराघवदावी ॥ ३६ ॥ वंशजाते करिस  
 ॥ घवशेवा ॥ की कथा करितियात असेवा ॥  
 ॥ सर्ववंश करि धन्य अहोते ॥ एकही नरअ  
 ॥ साजरि होतो ॥ ३७ ॥ वंशधन्य करिराम धरत्री  
 ॥ अर्पितां हृदय ॥ यडिली नगरि  
 ॥ वीसयमाची ॥ अशिया नियमाची ॥  
 ॥ ३८ ॥ वायु सभानं ॥ राजा ॥ की पुत्र  
 ॥ तो पापि चिया ॥ लाधेल से वील  
 ॥ रघूतमाते ॥ स्वपुत्र तो धन्य करील माते ॥ ३९ ॥  
 ॥ श्रीराम जन्म समयी जनरामराम ॥ प्रमे ह्यणे  
 ॥ ध्वनि उठे हृदया मिराम ॥ आकाश तो निर  
 ॥ वकाश सुरवे चि जाला ॥ की लोक शब्द हउ  
 ॥ ततापत इ विशाला ॥ ४० ॥ एक शब्द गु



॥ घासासहिवाणी ॥ रामनामनवदेजनवाणी ॥  
 ॥ रवेदहापरमजोगगनाशी ॥ रामशब्दसह  
 ॥ जेगगनाशी ॥ ४१ ॥ सुमित्रासुताच्याअहो  
 ॥ अग्रजाला ॥ जगीजन्मजालापरेशाअसा  
 ॥ ला ॥ असोसर्वभुवाशिआनंदजाला ॥  
 ॥ अपेक्षीअहिल्यापदाच्याअज्ञानजाला ॥ ४२ ॥  
 ॥ ऋषिसमस्तंभुवनेवर्तनी ॥ चरितगा  
 ॥ तिनिरोपितिनलसुखीऋषिवा +  
 ॥ लिभकवैखरी ॥ दाखविलीनिज  
 ॥ वैखरी ॥ ४३ ॥ विस्वामित्रस्वामिच्याजन्म  
 ॥ काळी ॥ नाचोलागेउल्हाच्यासुकाळी ॥  
 ॥ कीमीआताआणिनस्वाश्रमाते ॥ नाशी  
 ॥ माझ्यारामहोयाश्रमाते ॥ ४४ ॥ भविष्या  
 ॥ गतेपाहेकरनिहृदयीध्यानमुनिने ॥ सु



॥स्वेनाचोलागेव रितरघुनाथानमुनिवाम  
 ॥स्ववंशीरामाचेगुणरचितऐसेसमजला  
 ॥हणहेहोभाग्यत्रिभुवनिवसीष्टाशिमजला  
 ॥४५॥ श्रीमद्भागवतांतआणित्तरग्रंथी  
 ॥माहाभाती। श्रीमद्दामकथानिरूपि  
 ॥लबरीव्यासाचिहणारती॥गातांते  
 ॥चिमुकादिगं॥मध्यं वसिष्ट  
 ॥न्ययी। साशव॥मगापिलतइल  
 ॥क्षुनिसर्वा॥रथाध्यायरामा  
 ॥समानेमुनीहो॥स्ववंशीस्मरेभक्तजोहा  
 ॥मुनीहो॥सुरवेरामसेवीअश्यागोत्रजाला॥  
 ॥स्मरोनी॥त्रैषीमात्रसंतुष्टजाला॥४७॥  
 ॥इत्यादिरामचरितोरसहे। अपार॥श्रीव्या  
 ॥सवाल्मिकहिनेणुतिअंतपारा। हाग्रं





(१२)  
॥ थवामन निरोपितवामनाचा ॥ वाचा  
॥ हरीलमगतेसकळाधवाचा ॥ ४८ ॥ २५ ॥  
॥ श्रीरामजन्मसमाप्तं शुभं मस्तु ॥ २५ ॥ २५ ॥





(13)

१  
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीरामसमर्थी ॥ सीतासैवंप्रारंभा ॥ श्रीस्व १६

॥ यं वरवधुन वराहो ॥ लाञ्छरवं उमनिराघ

॥ वराहो ॥ भग्नतो करीधनुष्यभवाचं ॥ बी

॥ जतो हरुवरादीभवाचं ॥ १॥ ॥ वंदुनियं

॥ पदतयारघवं ॥ सैव निरापी

॥ नेलेशं वाचैस् ॥ करिभरुपतया

॥ रसाचं ॥ जेव्या ॥ कपुरातिल

॥ सारसाचं ॥ २ ॥ राम उद्धकनिगौतमं

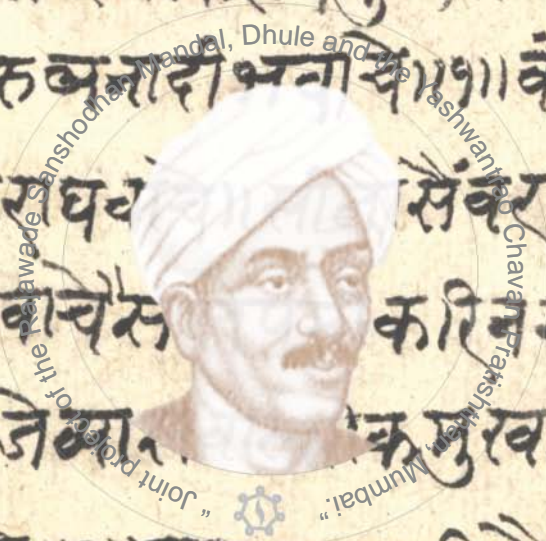
॥ जाया ॥ देनीरोपपति संनिधजाया ॥

॥ कौशीकासहग्रहाजनका च्या ॥ ३ ॥

॥ रावणादिकपति असुरैवैवृं दवं दन

॥ पभुमीसुराचं ॥ मान्यया जनकतो करी

मस्ययं वरवधुजनका च्या ॥ ३ ॥





॥पुजि॥तो मुनित दशकंठरि पुजी ॥४॥ बुजी

॥दीजे अनुभुवि जनकाची ॥ नैस्मृती स्फु

॥रेन मनाची ॥ मैतीया निज सुखा कनका

॥ची ॥ तो भक्ति संस्कार वरि विदेहापाज

॥पदी दउची जे विदेहा ॥ उगी करि सावरी

॥पुजे नाती ॥ वनी जवनी जमाते

॥६॥ आले बहु स्वही घराजे ॥ पु

॥ लीये थोयो मनुष्यां ॥ त्या नंतरं

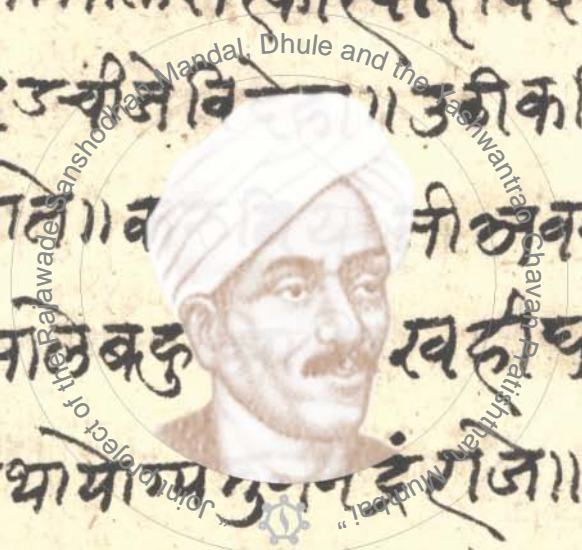
॥ आणी वीसा धनुष्यां ॥ नजे ठळे देस सु

॥ रां मनुष्यां ॥ ७ ॥ त्रिशत गणशी वाचेस

॥ तरे त्या धनुष्यां उ वलितिन ठलेजे

अन्ये देवां मनुष्यां ॥ तिही बहु बहु कष्टी

गारुगा धनि परे नपनाची





॥ टे विले चापरंगी ॥ दच कति नृप सारे दे  
 ॥ स्वतां आतं रंगि ॥ वाटे तया परम  
 ॥ दुलभते नवो जा ॥ जे ह्या पुरो हित ह्य  
 ॥ णे धनु कानवो दा ॥ को षि धरु नि  
 ॥ विसल्ला <sup>बसले</sup> <sup>च</sup> या ॥ उ सा ह बुडी नम  
 ॥ तां प्र मि दे ॥ १ ॥ स वा इ ॥ तो  
 ॥ दश कंठ अ कु ॥ तां भु जिते विष  
 ॥ कंठ धनु उ या ॥ क ह्य त का इ व रि  
 ॥ ही ज वो इ दि चा उ नि सा ज व रि ने र व य  
 ॥ लि ॥ चा प उ रि दं उ पे स उ पे म ग अन  
 ॥ न प किं ध रे र चि लि ॥ वा सु न दां त मु  
 ॥ स्वा ल दा हा ल पे उ म लि गा ठ त मि प च  
 ॥ लि ॥ १ ॥ चो ली ध ना क्ष रि ॥ को षि उ





॥ चलिता चाप बहु पावले हाताप ॥ कोष्ठी  
 ॥ उपराठिथाप सठ विता चाख लि ॥ राब  
 ॥ पेजेके लातान ॥ भोइंपडे ला उतां नश  
 ॥ कि करमा उछान अंबकाने राख लि ॥  
 ॥ दउपे धनुषे उर न किं रीघुरघुखे  
 ॥ णेशी दशा न वही देखली ॥ ता  
 ॥ हीपावतां विर ॥ शर पिराम ॥ ते  
 ॥ कोमुती अशि ॥ निमाने राख लि ॥  
 ॥ ११ ॥ नियमुक्तजरी निय किस्त श्री स्वये  
 ॥ स्वचरणि अनुरक्त हे अनन्य विषया  
 ॥ निजराम ॥ या निमित्त बुयणे रघुराम  
 ॥ १२ ॥ अणे विश्वामित्र स्वमनिसकळां  
 ॥ यभरवसे ॥ कळे आले आतां मजजे



॥ वळि विखांभर वसे ॥ लया श्रीगभाविणज  
 ॥ नकजाअन्यनवरि ॥ ह्रणो निबोले किउ  
 ॥ ठर धुपलिसाधीनवरि ॥ १३ ॥ श्रीरामते  
 ॥ क्कामुनिपादपत्रा ॥ वंदित जयोचे स्वपदि  
 ॥ चपत्रा ॥ अस्पाय उर वीक्षणतुनिसा  
 ॥ ची ॥ करिने वी ॥ ठतसाची ॥ १४ ॥  
 ॥ श्रुगार विरकन ॥ नवांरसाची ॥ लि  
 ॥ लाजगदु ॥ रसाची ॥ सप्रे  
 ॥ मतो दवा मया सरुसानवाते ॥ दाविस  
 ॥ भेसि उरतां सुरमानवाते ॥ १५ ॥ घनसा  
 ॥ रि ॥ दाविसीतेसी श्रुगार परिद्रासे सकु  
 ॥ मारे यात विसविकारा ॥ नीवीकारदाख  
 ॥ वि ॥ विप्रह्रणतिको जोरखठविसांचाप





॥ घोर कष्टि न हो हा वी घोर क्रु पार संरुघ  
 ॥ वीं ह्न पति मुं गिस पक्ष मुं ठा हा वीं हा  
 ॥ स्य पक्ष मानि ती हो वी र द क्ष दे व दै स  
 ॥ दान वि ॥ स ता शं स सी ता धा व चा पी  
 ॥ मो जी अ भी न व मे ती त्रे सा चार व भ  
 ॥ या न क मु च व कु गार शृ ग उ द  
 ॥ या च न रा मा च रं ग तु न ह द या  
 ॥ र धु रा म क द ग सुं द र व रा न व  
 ॥ त्रे धं रं गा ॥ रं गा ग णि ज न क ज्वा त लि  
 ॥ अं त रं गा ॥ १ ॥ शृ गार शृ गां ल ये के वी  
 ॥ रि हो ॥ सां गा अं न गा न ट के वी रि हो ॥  
 ॥ का से वी का से प ठ के वी रि हो ॥ श्री वा  
 ॥ क लि पं क ज के स रि हो ॥ १ ८ ॥ अं न ग रं



Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.



॥ गा बुद्धि च्या तरंगी ॥ रंगे शुभांगिं जती अं  
 ॥ तरंगी ॥ भंगि लहा हो धनु के विरंगिं ॥ ह  
 ॥ णे सुर गिन थं नि कुरंगि ॥ १८ ॥ श्रुंगा रपय  
 ॥ ही लारु स चारव विला ॥ विभ स शोक कर  
 ॥ योंत ची दारव विला ॥ कि पा हा तां विष  
 ॥ यो मानु गि सा ॥ विला ॥ ची ता न कि मन  
 ॥ करि लु ची का ॥ २० ॥ सुय वं श प  
 ॥ ति च्यो स कु मार ॥ तार ॥ यु प तिस  
 ॥ कु मार ॥ चा प ले क ग ग हा मृ द भा रि ॥  
 ॥ दे म ना त भ थ का म उ भा रि ॥ २१ ॥ ल ज्या  
 ॥ व ति फा र त धा पी या ची ॥ शे का न सी  
 ॥ मा चो रे हा पी या ची ॥ ह णे अ हा ता प  
 ॥ क र या प ना त ॥ के ल तं वी सं क ठ अ प ना त  
 ॥ २१ ॥





## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com